RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimri.com

उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले किशोर विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Ranchhodbhai K. Prajapati
Principal,
Shri Swaminarayan Gurukul B.ed. College,
Palanpur, (B.K.), Gujarat (India)

प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन का लक्ष्य किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताओं का अध्ययन एवं उनका सृजनशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि के साथ सम्बन्धों का अध्ययन करना है।

शोध समस्या का उद्‌गम

दुश्चिन्ता एक ऐसा भावनात्मक गुण है जो प्रत्येक व्यक्ति में कम या अधिक मात्रा में पाया जाता है। दुश्चिनता भय या आशंका के कारण उत्पन्न होती है। किशोर विद्यार्थियों की सर्वाधिक दुश्चिन्ताएँ जिन बातों को लेकर होती है वे हैं– परीक्षा, अध्यापकों से सम्बन्ध, साथियों से सम्बन्ध, दुर्घटनाओं की आशंकाएँ, अपर्याप्त साधन सुविधाएँ, व्यवसाय–नौकरी, घर, स्वास्थ्य, कुसंगति, असफल होना, अलोकप्रिय होना, दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाना, अकेलापन, गलत प्रमाद में पड़ना, पहनावा, विपरीन यौन, मित्र, पाठ्यक्रम वातावरण आदि।

दुश्चिन्ताएँ बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रभावित करती है। अधिक दुश्चिन्ता अथवा कम दुश्चिन्ता बालक की भावनाओं को प्रभावित करती है, ये दोनों ही बालकों के गुणों के विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

उपर्युक्त वर्णित अध्ययनों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि किशोर विद्यार्थियों में दुश्चिन्ताएँ होना स्वाभाविक है। दुश्चिन्ता का बुद्धिलब्धि, सांवेगिक बुद्धि, सृजनशीलता, एवं आकांक्षाओं पर घनात्मक अथवा ऋणात्मक प्रभा वहोता ही है इस पर कोई मतेक्य नहीं है।

शोधकर्ताओं द्वाराकिए गए शोध कार्यों के निष्कर्षों का अध्ययन करने के पश्चात् शोधकर्ता के मनमें यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि क्या दुश्चिन्ता का स्तर किशोर बालक की भावनाओं, संवेगों एवं सृजनशीलता को प्रभावित करता है। यदि हो तो किस स्तर पर। क्या निम्न दुशिचिन्त और उच्च दुशिचिन्तित किशोर विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं सांवेगिक बुद्धि उनके अनुरूप उच्च एवं निम्न हो सकती है या ये अप्रभावित रहती है। इसी प्रकार के कई प्रश्न विद्यमान हैं जिनका उत्तर खोजना और उनका गहन अध्ययन करना शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक है और यदि इनका अध्ययन नहीं किया गया तो यह एक सामाजिक क्षति हो सकती है।

इसी सन्दर्भ में शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन विषय का चयन किया।

समस्या कथन

उपर्युक्त वर्णित समस्या संज्ञान के आधार पर शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन के लिए निम्नांकित रूप में शोध समस्य को प्रस्तुत किया–

''उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले किशोर विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन''।

"A comparative Study of Creativity and Emotional Intelligence of Adolescents Having Higha nd Low Anxiety"

शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या

शोध समस्या में निम्नलिखिता तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया गया है जिन्हें समझना आवश्यक है –

दुश्चिन्ता

दुश्चिन्ता अथवा चिन्ता का अर्थ एक ऐसी कष्टदायक मानसिक स्थिति से है जिसमें विपत्तियेां की आशंका से व्यक्ति व्याकुल होता है।

स्पाईलवरगर (1960, च्प 387) के अनुसार– ''चिन्ता उदोलन की वह अवस्था है जो भय से बचने के कारण उत्पन्न होती है।''

सृजनशीलता

सृजनशीलता वह योग्यता है जिसके द्वारा नए सम्बन्धों का ज्ञान होता है, इसकी उत्पत्ति में चिन्तन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचार उत्पन्न होते है।

हेविंग हर्स्ट (1961, 272) के अनुसार– सृजनशीलता वह गुण है जो नवीन तथा वांछित वस्तु के उत्पादन की और आकृष्ट करता है।

सृजनशीलता किसी समस्या का समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनाती है।

सांवेगिक बुद्धि:

सांवेगिक बुद्धि व्यक्ति की वह योग्यता एवं कुशलता है जिसके द्वारा वह अपने संवेगों का संतुलन करता है और उनका उपयोग प्रतिदिन के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में करता है।

गोलमेन (1995) के अनुसार– सांवेगिक बुद्धि व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह अपनी स्वयं की भावनाओं एवं उसके सम्पर्क में आने वाले अन्य व्यक्तियों की भावनाओं को समझकर ऐसा व्यवहार करता है जिससे उसके स्वयं के व्यक्तित्व में अधिक निखार अथवा आकर्षण पैदा हो।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि उसे सफलता के सोपान पर पहुँचाने की योग्यता है।

किशोर विद्यार्थी

किशोरावस्था (Adolescence) जन्मोपरांत मानव विकास की तृतीय अवस्था है जो बाल्यकाल की समाप्ति के उपरान्त प्रारम्भ होती है तथा युवावस्था के प्रारम्भ होने तक चलती है। यद्यपि व्यक्तिगत भेदों, जलवायु आदि के कारण किशोरावस्था की अवधि में कुछ अन्तर पाया जाता है परन्तु फिर भी प्रायः 13 से 19 वर्ष आयु के बीच की अवधि को किशोरावस्था कहा जाता है।

बाल्यावस्था तथा वयस्कावस्था के बीच का संधिकाल होने के कारण इसे जीवन का सर्वाधिक कठिन काल माना जाता है । प्रस्तुत शोध में कक्षा (IX और X) वीं कक्षा में अध्ययन विद्यार्थियों को किशोर विद्यार्थी के रूप में परिभाषित किया गया है।

शोध के उद्देश्य

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नांकित उद्देश्यों का निर्माण किया–

- किशार विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताओं का अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले किशोर विद्यार्थियों की सृजनशीलता का अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले किशोर विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना।
- उच्च दुश्चिन्तावाले छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्यन करना।
- निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनामक अध्ययन करना।
- निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

शोधकर्ता ने निम्नांकित परिकल्पनाओं को अध्ययन से पूर्व निर्धारित कर इन्हें शोधकार्य का आधार बनाया –

- उच्च दुश्चिन्ता रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले विद्यार्थियों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं निम्न दुश्चिन्ता वाली छात्राओं की सृजशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाली छात्राओं में एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाली छात्राओं की सृजशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं निम्न दुश्चिन्ता वाली छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाली छात्राओं में एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाली छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन परिसीमन

समय एवं धन की सीमा को दृष्टि में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन के क्षेत्र को निम्नानुसार परिसीमित किया गया है।

- प्रस्तुत अध्ययन गुजरात राज्य के पाटन जिले तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन में 14–17 वर्ष एवं माधयिमक कक्षाओं (IX और X) में अध्ययनरत विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन हेतु गुजरात राज्य शिक्षण बोर्ड का पाठ्यक्रम संचालित करने वाले माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का ही चयन किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता, सृजनशीलता और सांवेगिक बुद्धि को ही चर के रूप में सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष, शोध में प्रयुक्त समष्टि पर ही लागू होंगें।

शोध का औचित्य

शिक्षा जगत् में गुणात्मक स्तर पर बुद्धि के लिए सतत् शोधकार्य होना आवश्यक है। इससे ज्ञान के प्रति तार्किक विकास होता है। शोध कार्य किसी समस्या का वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध रूप से विश्लेषण और समाधान होता है जो अनुमानित न होकर अन्वेषण का परिणाम होता है।

प्रस्तुत शोध समस्या का अध्ययन भी वैधानिक एवं सांख्यिकीय प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया है। वर्तमान परिस्थितियों में किशोर छात्र एवं छात्राओं की विघटनकारी प्रवृत्तियों को देखते हुए प्रस्तुत समस्या का अध्ययन करना शिक्षा के क्षेत्र में अत्यावश्यक है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च एवं निम्न दुश्चिनता रखने वाले विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं सांवेगिक बुद्धि के अध्ययन के लिए तुलनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

वैज्ञानिक शोधकार्य के अन्तर्गत किसी समस्या के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक उपकरण एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया का चयन करना पड़ता है। इससे समस्या के निष्कर्ष विश्वसनीय एवं वैध होते है। अनुसन्धानकर्ता द्वारा वैज्ञानिक शोध अध्ययन करने के लिए निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

(अ) स्वनिर्मित उपकरण :–

शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताओं का मापन करने के लिए निम्नांकित परीक्षण तैयार किया –

(ब) मानकीकृत उपकरण :–

शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थीयों की सृजनशीलता एवं सांवेगिक बुद्धि का मापन करने के लिए निम्नांकित मानकीकृत उपकरणेां का प्रयोग किया–अभिव्यक्त दुश्चिन्ता प्रमापनी

- सृजनात्मक योग्यता परीक्षण (शाब्दिक) डॉ. भगवतीलाल व्यास
- सांवेगिक बुद्धि कसोटी डॉ. लता कुमारी डॉ. शर्मा

शोध न्यादर्श

प्रत्येक शोध अध्ययन का एक क्षेत्र होता है जिसे समष्टि कहते हैं। शैक्षिक अध्ययनों में समष्टि से आंकड़े इकट्ठा करना बहुत–बहुत कठिन कार्य होता है। इसलिए समष्टि में से कुछ ऐसे अंशों का चयन किया जाता है जिनमें समष्टि की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व होता है, ऐसे अंश को न्यादर्श कहा जाता है।

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन हेतु, गुजरात राज्य के पाटन जिला के माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में ग्रहण किया गया है। न्यादर्श हेतु 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श चयन के लिए 500 विद्यार्थियों (250 छात्र एवं 250 छात्राओं) पर अभिव्यक्त दुश्चिन्ता प्रमापनी का प्रशासन किया गया। इस उपकरण पर प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों को घटते क्रम के अनुसार क्रम दियागया। इसके पश्चात्

250 छात्रों मेंसे ऊपर के 75 एवं नीचे से 75 छात्रों का चयन किया गया। ऊपर वाले समूह को उच्च दुश्चिन्ता समूह एवं नीचे वाले समूह को निम्न दुश्चिन्ता समूह नाम दिया गया। बीच के 100 छात्रों को छोड़ दिया गया। इसी प्रकार 250 छात्राओं में 150 छात्राओं (75 उच्च दुश्चिन्ता समूह एवं 75 निम्न दुश्चिन्ता)समूह का चयन किया गया।

न्यादर्श प्रारूप

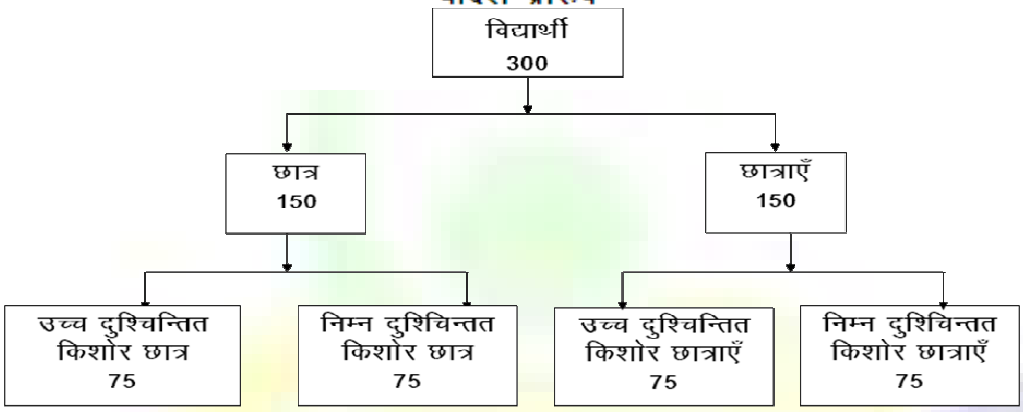

यह शोध कार्य अध्ययन प्रारूप से लेकर निष्कर्षों तक पूर्ण रूप से व्यवस्थित किया गया। इस अनुसन्धान कार्य को शोधकर्ता द्वारा निम्नांकित अध्यायों में प्रस्तुत किया गया–

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधकर्ता द्वारा संकलित किए गए आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

- मध्यमान
- मानक विचलन
- t- अनुपात
- t= टेस्ट

इसके लिए परिकल्पनाओं का परीक्षण कर उन्हें स्वीकृत या अस्वीकृत किया गया।

अध्ययन की कार्ययोजना

1	प्रथम अध्याय	–	शोध आकल्प
2	द्वितीय अध्याय	–	सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि एवं सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन
3	तृतीय अध्याय	–	शोध उपागम उपकरण एवं न्यादर्श
4	चतुर्थ अध्याय	–	दुश्चिन्तता का मापन एवं विश्लेषण
5	पंचम अध्याय	–	सृजनशीलता का मापन एवं विश्लेषण
6	षष्ठम अध्याय	–	सांवेगिक बुद्धि का मापन एव विश्लेषण
7	सप्तम अध्याय	–	शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से प्राप्त समस्त निष्कर्षों को इस अध्याय में निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है–

- दुश्चिन्ताओं का मापन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष
- सृजनशीलता का मापन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष
- सांवेगिक बुद्धि का मापन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष
- दुश्चिन्ताओं का मापन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों

दुश्चिन्ताओं का मापन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष

- उच्च दुश्चिन्ता रखने वाले विद्यार्थियों की सबसे अधिक दुश्चिन्ता शैक्षिक उपलब्धि एवं उचित सार्थक अध्ययन सामग्री के अभाव के क्षेत्रों में प्राप्त हुई। इसके पश्चात् इनकी दुश्चिन्ताएँ क्रमशः इन्हें आर्थिक हीनता, विद्यालय वातावरण, ट्यूशन एवं कोचिंग पारिवारिक वातावरण, परीक्षा एवं अध्यापक के व्यवहार के क्षेत्रों में प्राप्त हुई।

- उच्च दुश्चिन्ता रखने वाले छात्रों की सबसे अधिक दुश्चिन्ता शैक्षिक उपलब्धि के प्रति है। इसके पश्चात् इन छात्रों की दुश्चिन्ताएँ क्रमशः ट्यूशन एवं कोचिंग, उचित एवं सार्थक अध्ययन सामग्री का अभाव, परीक्षा, अध्यापक व्यवहार विद्यालय वातावरण, आर्थिक हीनता तथा पारिवचारिक वातावरण के प्रति प्राप्त हुई।
- उच्च दुश्चिन्ता रखने वाली छात्राओं की सबसे अधिक दुश्चिन्ता उचित एवं सार्थक अध्ययन सामग्री का अभाव क्षेत्र में प्राप्त हुई। इसके पश्चात् इन छात्राओं की दुश्चिन्ताएँ क्रमशः आर्थिक हीनता, विद्यालय वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, ट्यूशन एवं कोचिंग, परीक्षा एवं अध्यापक व्यवहार के प्रति प्राप्त हुई।

सृजनशीलता का मापन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष

- उच्च दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की कुल सृजनशीलता सामान्य स्तर की प्राप्त हुई।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की प्रवाहिता के क्षेत्र में सृजनशीलता सामान्य स्तर की प्राप्त हुई।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की अनाग्रह के क्षेत्र में सृजनशीलता सामान्य स्तर की प्राप्त हुई।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की मौलिकता के क्षेत्र को सृजनशीलता सामान्य स्तर की प्राप्त हुई है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की संवेधता के क्षेत्र में सृजनशीलता सामान्य स्तर की प्राप्त हुई।

सांवेकिग बुद्धि का मापन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष

- उच्च दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का स्तर उच्चतर है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की स्व सभानता के क्षेत्र मे सांवेगिक बुद्धि का स्तर उच्च है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की स्वनियमन, स्व–प्रेरणा सामाजिक सभानता एवं सामाजिक कौशल्य के क्षेत्रेां में सांवेगिक बुद्धि का स्तर उच्चतर है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सांवेगिक बुद्धि का स्तर उच्चतर है।
- उच्च दुश्चिनता वाले विद्यार्थियों की स्वनियमन क्षेत्र में सांवेगिक बुद्धि का स्तर उच्च है। अन्य क्षेत्रों–स्व सभानता स्व–प्रेरणा, सामाजिक सभानता एवं सामाजिक कौशल्य में सांवेगिक बुद्धि का स्तर उच्चतर है।

आगामी शोध हेतु सुझाव

किशोर विद्यार्थियों के व्यवहार को समझना, उनकी मानसिक स्थिति का आंकलन करना और उनकी विस्फोटक शक्तियों को उचित दिशा प्रदान करने के लिए अभी ओर अध्ययन की आवश्यकता है। दुश्चिन्ताऐं सृजनशीलता एवं सांवेगिक बुद्धि के अतिरिक्त ओर की कई ऐसे आयाम है जिन पर शोध अध्ययन किया गया जाना चाहिए। इन अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर ही किशोरों को पूर्ण रूप से समझा जा सकता है और उन्हें उचित दिशा प्रदान कर मुख्य धारा से विलग होने से बताया जा सकता है। यहाँ भावी शोध अध्ययन के लिए कुछ सुझाव दिए जा रहे है –

- उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त किशोर विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि एवं सृजनात्मक का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न आर्थिक वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि एवं सृजनशीलता के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की सृजनशीलता, सांवेगिक बुद्धि एवं आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों की सांवेगिक बुद्धि एवं सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- किशोर विद्यार्थियों की समय प्रबन्धन एवं सांवेगिक बुद्धि के सम्बन्धों का अध्ययन करना।
- किशोर विद्यार्थियों की पश्चिमीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की महत्त्वाकांक्षा, मानसिक तनाव एवं पारिवारिक वातावरण के साथ सह सम्बन्धों का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता में प्रभावक तत्वों का अध्ययन करना।
- किशोर विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि एवं नैतृत्व क्षमता के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।
- किशोर विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता और आकांक्षा स्तर के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना।

सारांश

प्रस्तुत अध्याय में सर्वप्रथम प्रस्तुत शोध की आवश्यकता एवं इससे सम्बन्धित कार्यों की विवेचना को प्रस्तुत किया गया और इस विवेचन के आधर पर शोध समस्या का आंकलन किया गया। तत्पश्चात् शोध समस्या में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात् शोध के उद्देश्य एवं तत्सम्बन्धी परिकल्पनाओं को प्रस्तुत किया गया। परिकल्पनाओं का निर्माण शून्य परिकल्पना के आधार पर किया गया।

इसके बाद प्रस्तुत अध्ययन का परिसीमन किया गया। प्रस्तुत शोध शिक्षकों, शिक्षार्थियों, अभिभावकों, नीतिनिर्धारकों, निर्देशन एवं अनुसन्धान की दृष्टि से किस तरह औचित्यपूर्ण है इसका उल्लेख किया गया। इसके पश्चात् शोध विधि, शोध उपकरण न्यादर्श चयन विधि शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी एवं संपूर्ण अध्ययन की कार्य योजना प्रस्तुत की गई है।